महाराज छत्रपति शिवाजी

का

जीवनचरित ।

दच्छिन जीति लियो दल के बल पच्छिम जीति कै चामर चाख्यो। रूप गुमान गय्यो गुजरात को सूरत को रस चूसि कै चाख्यो ।। पञ्जन पेलि मलेच्छ मले बचे भूषन सोई जो दीन व्है भाख्यो । सौरङ्ग है शिवराज बली जिन नौरङ्ग मै रङ्ग एक न राख्यो ।।

श्रीकार्त्तिकप्रसाद लिखित ।

और

बाबू नन्दलाल वर्म्मा द्वारा प्रकाशित।

काशी ।

राजराजेश्वरी मुद्रायन्त्र में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९४ ई० ।

भूमिका ।

---*---

जिस देश में या जिस समाज में जो चिरस्मरणीय कीर्त्तिवान लोग उत्पन्न होते हैं वेही उपदेश वा समाज के रत्न वा गौरव माने जाते हैं। और उन्हीं से उस समाज की शोभा होती है क्या शिवाजी ऐसे वीर हम लोगों के गौरव नहीं हैं ? अवश्य हैं। जिस समय उस वीर पुरुष के इतिहास को पढ़ते हैं तो अबलों उस अतीतकाल की घटनायें चित्र सी नेत्रों के आगे झलक जाती हैं। हृदय में आनन्द और उत्साह उमग आता है, शरीर पुलकित और रोमाञ्चित हो जाता है। ऐसे शिवाजी के जीवनचरित्र पढ़ने की किसे इच्छा न होगी ? अवश्य होहीगी। बस इसी आश्वास से आश्वासित हो आज इस क्षुद्र पुस्तक को आप लोगों के भेट करता हूं और साथही प्रार्थना है कि सिवाय शिवाजी के गुणकीर्त्तन के इसमें दूसरा ऐसा कोई भी गुण नहीं है कि जिससे आप रीझें। जो हो सत् गुण बिभूषित सज्जनों से निवेदन है कि इसके मूल उद्देश्य पर ध्यान दे मेरी भूल चूक को क्षमा करें। कृतज्ञता पूर्व्वक मैं स्वीकार करता हूं कि इस पुस्तक के लिखने में मुझे नीचे लिखी पुस्तकों से सहायता लेनी पड़ी है— C. Marshman's History of India श्रीयुत बाबू रजनीकान्त गुप्त की "वीरमहिमा" श्रीयुत बाबू रमेशचन्द्रदत्त का भारतवर्षीय इतिहास। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र लिखित "महाराष्ट्र देश का इतिहास और भूषण कवि का शिवराज भूषण।

कार्त्तिकप्रसाद।

छत्रपति महाराज शिवाजी

का

जीवनचरित्र ।

—○*○—
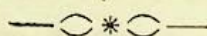
जय जयति जय आदि शक्ति जय कालिकपर्दनि ।
जय मधुकैटभ छलनि देविजय महिष विमर्दिनि ॥
जय चमुण्ड जय चण्डमुण्ड भण्डासुर खण्डिनि ।
जय सुरक्त जय रक्तवीज विड्डाल विहण्डिनि ॥
जय निशुंभ शुंभदलनि भनि भूषन जय जय भननि
सरजासमर्थशिवराजकहँदेहिविजयजयजयजननि ॥

भारत के दक्षिण-पश्चिम दिशामे एक छोटासा पहाड़ी देश है । इसके उत्तरमे सतपुरा पहाड़ अचल घिरा पड़ा है, पश्चिम दिशा में अति गभीर तरङ्गों से तरङ्गित अपार अनन्त नीलवर्ण समुद्र निज भयावनी मूर्त्ति से घिर रहा है । पूरब की ओर बरदा नदी बह रही है, और दक्षिण ओर गोवा नगर एवं पहाड़ी बीहड़ धर्त्ती है । इसी प्रदेश का नाम महाराष्ट्र देश है इसका परिमाण फल १०२००० वर्ग मील है । इस देशमे उत्तर-दक्षिण की ओर दुरारोह पर्वत गहन वनो से ढका पड़ा है कि जिसकी मनमोहनी छटा देखेही वन आती है ॥

ईसवी १६०० सदी मे अहमदनगर के राजा के यहां मालो-जी भोंसला नामका एक बहादुर रिसालदार था। इसके कोई सन्तति न थी। इसकी स्त्री ने "शाह सफर" की दरगाह मे पुत्र होने की मनौती मानी । दैवयोग से उसको गर्भ रहा और सन् १५९४ ईसवी में पुत्र उत्पन्न हुआ। अपने मनौती के अनुसार पुत्रका नाम शाहजी रक्खा गया। मालेजी ने अपने बेटे शाहजी का विवाह अहमद नगर के बादशाह के दस हजारी सरदार जादोराव की बेटी से किया, और पूना और सूबा बादशाह से जागीर में पाया तथा शिवनेरी और चाकण ये दोनों किलों पर सरदार भी नियत हुआ।

अहमदनगर की बादशाहत बिगड़ने पर शाहजी शाहजहां बादशाह के पास दिल्ली गया और वहां से अपनी जागीर कायम रखने के लिये सनद ले आया। पर थोड़ेही दिन पीछे किसी वैमनस्य से दिल्ली का अधिकार छोड़कर वह बीजापूर के बादशाह से जा मिला और अपने राज्य में करनाटक के बहुत से गाँव मिला लिये। धीरे धीरे इसने अपना अधिकार अधिक फैला लिया ।

शाहजीने जीजीबाई नामकी एक महाराष्ट्र कन्या से विवाह किया। जीजीबाई के गर्भ से शाहजीके दो पुत्र जन्मे । बड़े का नाम शम्भूजी और छोटे का शिवाजी।

सन् १६२७ ईसवी के मई महीने में पूनेसे पचास मील उत्तर सिउनेरी गढ़ में शिवाजी का जन्म हुआ। शाहजी का प्रेम अपने बड़े बेटे शम्भूजीही पर अधिक था, इस लिये शम्भुजी को तो सदा वह अपने साथ रखते परन्तु शिवाजी अपनी माताही के साथ रहा करते थे।

शिवाजी के जन्म के तीनवर्ष के उपरान्त शाहजीने तुकाबाई

नामकी एक मराठिन से विवाह करलिया । दूसरा विवाह करने के कारण जीजीबाई से शाहजी की अनबनत होने लगी, उस समय शाहजी की अवस्थिति करनाटक मे थी । शाहजीने जीजीबाई को और निज पुत्र शिवाजी को अपनी पूना की जागीर में भेज दिया, और दादाजी कर्णदेव नामी एक सुचतुर मनुष्य को उनकी रखवाली और पूनाकी जागीर के सम्भाल के लिये उनके साथ करदिया । दादाजी कर्णदेव बड़ेही सुचतुर, कार्य्यदक्ष और प्रभुभक्त थे । पूना में आकर दादाजी कर्णदेव ने जीजीबाई और शिवाजी के रहने के लिये एक अति उत्तम महल बनवाया कि जिसमें शिवाजीने अपने बचपन के दिन बिताये थे । शिवाजी को विद्या शिक्षा देनेके लिये दादाजीने बहुत कुछ यत्न किया परन्तु पढ़ने लिखने में शिवाजी का चित्त जमता नहीं था और न इनकी इस ओर रुचिही थी । इनकी स्वभाविक चित्तवृत्ति सिपाहगिरी की ओरही अधिक थी । इस लिये दादाजी ने शिवाजी को पढ़ना लिखना छुड़ा तीरन्दाजी, नेज़ेवाजी, घोड़ेपर चढ़ना आदि सिपाहगीरी केफन मे अच्छी शिक्षादी कि जिस्से शिवाजी ने बड़े परिश्रम और चाह से सीखा । कुछ दिनों के उपरान्त शिवाजी युद्ध विद्या में पूर्ण विशारद हो गये । विद्या विषय में तो शिवाजी अपना नाम भी कठिनता से लिखते थे परन्तु अपने सनातन धर्म्म कर्म्म में यह बड़ेही नेष्टावान और दृढ़ थे । महाभारत, रामायण आदि पुराण इतिहासों पर शिवाजी का ऐसा दृढ अनुराग थाँ कि जहां कहीं महाभारत आदि की कथा होती वहां अवश्यही जाते और भक्ति पूर्वक सुन्ते । प्राचीन आर्य वीर पुरुष की वीरता को सुन सुन उन्हें बड़ाही आनन्द होता और हृदय में वीरता की उत्तेजना हो आती । गौ ब्राह्मण की रक्षा और सेवा में

वह सदा सयत्न रहा करते थे। और ज्यों ज्यों इन बातों की उनके हृदय में दृढ़ता होती जाती थी, त्यों त्यों परधर्म्मी मुसल्मानों पर कोप और घृणा बढ़ती जाती थी। शिवाजी की यह दृढ़ प्रतिज्ञा थी कि, हिन्दूधर्म्म द्वेषीओं को नाश कर सारे भारत पर निज धर्म्म को दृढता से फैलावें सदा गौ ब्राह्मण की रक्षा और सेवा करें। बड़ी २ कठिनाइओं और विपदाओं को भूलने पर भी उनकी स्वधर्म्म नेष्टा दिनों दिन यों बढ़ती जाती थी कि जैसे बार बार तपाने से सुवर्ण की जिलो होती है। अपने जीवन के अन्त दिन तक भी उनके हृदय से अपनी टेक न भूली।

मावल पर्व्वत के रहनेवाले मावली जाति पर शिवाजी का बड़ा विश्वास और स्नेह था। क्योंकि ये लोग बड़े उद्योगी, कामकाजी, साहसी, परिश्रमी और लड़ाकु होते थे। इन्हीं मावलीओं के लड़कों को साथ लेकर शिवाजी जङ्गल पहाड़ों पर घूमा करते और शिकार खेलते। योंही घूमते घूमते दूर दूर तक के पहाड़ी और झांड़ओं के राह घाट से शिवाजी खूबही परिचित्त हो गये थे। धीरे धीरे इनके साथीओं का जमाव बढ़ता गया और कुछ दिनों में इन्होंने अपने आधीनी में एक छोटी सी पल्टन बनाली।

उन्नीस वर्ष अर्थात सन् १६४६ वीं इस्वी में इन्होंने तोरन का किला जीत लिया। यह किला एक ऐसे विकट पहाड़ के ऊपर था कि जिस पर पहुंचना बड़ाही कठिन था।

सन् १६४८ में शिवाजी ने एक नया किला बनाया और उसका नाम रामगढ़ रक्खा। योंहीं बीजापूर के राजा की कई एक गढ़िओं पर अपना अधिकार जमा लिया। शिवाजी की ऐसी कार्य्यवाहीओं को देख बीजापूर की सरकार ने क्रोधित होकर शाहजी के

पास करनाटक में पत्र भेजा कि, तुम अपने पुत्र को हटको नहीं तो इसका परिणाम तुम्हारे लिये खोटा होगा । इसके उत्तर में उन्होंने लिख भेजा कि, इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता और न मैं अपने पुत्र शिवाजी से कोई सम्बन्धही रखता हूं। परन्तु दादाजी को शाहजी ने इस आशय का एक पत्र लिखा कि शिवाजी को ऐसी उद्दण्डता से रोकें। दादाजी के हटकने पर शिवाजी ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया कि मैं तो गौ ब्राह्मण तथा दीन किसानों की रक्षा करता हूं कोई कुकर्म्म नहीं करता। कुछ दिनों के उपरान्त दादाजी कर्णदेव की मृत्यु हुई। अपनी मृत्यु के पूर्व दादाजी ने शिवाजी को अपने पास बुलाकर कहा कि "पुत्र तुम सदा अपने धर्म्म में दृढ रहो और गौ ब्राह्मण की रक्षा करते रहो भगवान तुम पर सदय है वही तुम्हारे भाग्य और विक्रम को बढ़ावेगी।

सन् १६४९ ईस्वी में दादाजी कर्णदेव के मरने के उपरान्त शिवाजी ने पिता के जागीर का कार्य्य अपने हाथ लिया और दोही वर्ष में अपना अधिकार तीस मील के फैलावे में जमा लिया। खजाने का तीन लाख "पेगोडा * वीजापूर को जा रहा था राह में शिवाजी ने लूट लिया और किसी पहाड़ी गुप्त स्थान में जा छिपाया। इसी अरसे में शिवाजी ने और इसी वर्ष अर्थात् ईस्वी १६४९ में बीजापूर की सरकार से कल्याण की सूबेदारी छीन ली। तब तो वीजापूर की सरकार ने शाहजी को करनाटक में कैद करा लिया और कहा कि जब तक तुम्हारा लड़का अपने उपद्रव से बाज न अवेगा तुम्हें कारागार में रहना पड़ेगा और अत्यन्त कठिनाई से तुम्हारे प्राण लिये जा-

* पेगोडा = एक प्रकार का मदराजी सिक्का मूल्य ८ सिलिङ्ग अर्थात् चार रुपये होते थे।

यँगे । शाहजी ने बहुत कुछ कहा और सत्य कहा कि मैंने निज पुत्र शिवाजी से कोई भी वास्ता नहीं रक्खा है पर कुछ सुनाई न हुई।

वाजिवुरपुरे नाम के एक महाराष्ट्र ने विश्वास घात से शाहजी को गिरफ्तार करवा दिया था। उस समय शिवाजी की बाईस वर्ष की अवस्था थी इन्होंने सोचा कि जब तक पिता कैद से न छूट लें शान्त रहना चाहिये। ऐसा विचार कर शिवाजी लाचार हो कुछ काल तक शान्त रहे। जब सुना कि शाहजी कैद से छूट गये तो पुनः लूट मार करने लगे और जावली के स्वामी को मार उसका राज्य अपने अधिकार में कर लिया।

सन् १६५७ में कि जिस समय औरङ्गजेब बीजापुर से युद्ध में प्रवृत्त हुआ उस समय शिवाजी ने औरङ्गजेब को लिख भेजा की मैं आपकी सेवा करने और बीजापूर से युद्ध करने में राजी हूं। शिवाजी के इस कहने में औरङ्गजेव आगया और बीजापूर राज्य का जितना हिस्सा शिवाजी ने दखल कर लिया था औरङ्गजेव ने इन्हे लिखदिया। परन्तु बीजापूर से औरङ्गजेव की फौज के लौट आने पर शिवाजी मुगलों के अधिकृत स्थानोपर भी चढ़ाई करने और उन्हे अपने अधिकारमें लाने लगे। शिवाजी जुनेरी की रियासत से तीन लाख पेगोड़ा लूट लाये। अब शिवाजी को अधिक सैन्य रखने की आवश्यकता हुई, इसलिये उन्होंने अपनी सैन्य संख्या बढ़ाई। उसी समय सात सौ पठानों को बीजापूर की सरकारने अन्याय पूर्वक छुड़ादिया था। शिवाजीने उन पठानों को अपनी सैन्यमें भर्त्ती कर लिया और उन्हे एक मरहट्टे सरदार की आधीनी में कर दिया। शिवाजी ने विचारा की प्रबल औरङ्गजेव से विना मिले भली प्रकार कार्य्य सिद्धी न होगी इसलिये दूत द्वारा

औरङ्गजेब को यह कहला भेजा कि मैं अपने क्रूर कार्य्यों के लिये बड़ाही लज्जित और दुखी हूं, परन्तु अब मेरा यह निवेदन है कि यदि कोकन की जागीर मुझे मिलजाय तो मैं सदा बादशाही अमलदारीओं की रक्षा करता रहूंगा! इधर औरङ्गजेब ने विचारा कि महाराष्ट्र देश में इस समय शिवाजी एक अच्छा वीरपुरुष है इसलिये उसे मिला रखनाही सलाह है । ऐसा सोच बादशाह ने लिख भेजा कि तुम खुशी से कोकन पर अपना कब्जा करलो। इस आज्ञा को पातेही सन १६५९ इसवीं में शिवाजी ने कोकन पर अपनी चढ़ाई की परन्तु दैवयोग से शिवाजी की बहुत सैन्य मारी गई और अन्तहार हुई। जबसे शिवाजीने युद्ध करना प्रारम्भ किया था यह हार का पहिला मौका था।

अपने राज्य का अधिकाँश हिस्सा शिवाजी द्वारा अधिकृत होते देख सरकार बीजापूर ने शिवाजी को दमन करने के लिये अपने प्रधान सरदार अफज़लखाँ को बारह हजार सवार और पैदल तथा पहाड़ी तोपखाने के साथ भेजा। उस समय शिवाजी की अवस्थिति प्रतापगढ़ में थी शिवाजी साम, दाम, दण्ड, भेद आदि राजनीति में बड़ेही दक्ष थे॥ इन्होंने अफज़लखाँ से कहला भेजा कि मेरी क्या ताव है कि आप ऐसे वीरपुरुष से मैं युद्ध ठानू या युद्ध करने का साहस करूं। इसलिये मेरी आप से यह प्रार्थना है कि यदि आप मेरे कृतकार्य्यों को भूलजावें तो आजतक मैंने आपके जितने किलोंपर दखल किया है छोड़दूं।

शिवाजी की इस चापालूसी में आ अफज़लखाँ ने विचारा कि बिकट जंगल पहाड़ों पर सैन्य लेजाकर शिवाजी से लड़ना बड़ाही कठिन है, फिर न जाने जय हो या पराजय, इसलिये जब कि शि

वाजी स्वयम् हमसे क्षमा मांगता है और किलेंपर से अपना अधिकार भी हटालिया चाहता है तो इससे बढ़ कर और क्या चाहीये। ऐसा विचार अफज़लखाँ ने गोपीनाथ पंथ नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मण को शिवाजी के पास भेजा । गोपीनाथ प्रतापगढ़ के नीचे किसी इक ग्राम में जाकर टिके ओंर शिवाजी को अपने आनेका सन्देसा कहला भेजा। इस समाचार को सुन्तेही शिवाजी किलेपर से उतर आये और गोपीनाथ पंथ से भेट की। गोपीनाथ ने शिवाजी से कहा,—"आपके पिता शाहजी से अफज़लखाँ की बहुत दिनों से मित्रता चली आती है, इसलिये वह अपने मित्र के पुत्रसे वैर नहीं बढाया चाहते। उनकी इच्छा यह है कि आपको एक जागीर देकर इस झगड़े का निबटेरा करडालें" शिवाजी ने बड़ी नम्रता से इसका उत्तर दिया कि मैं तो बीजापुराधशि का एक छोटा सा सेवकहूं, यदि मुझे एक जागीर मिलजाय तो मैं उसीसे अपना गुजारा करूं और फिर मुझे इस टंटे बखेड़े से क्या लाभ : शिवाजी की ऐसी मीठी मीठी बातों को सुन पंथजी मोहित होगये । शिवाजी ने गोपीनाथ पंथ के टिकने के लिये एक स्थान नियत कर दिया, और उनके अनुमति से गोपीनाथ के साथीओं ने कुछ दूरी पर अपना डेरा डाला। एक दिन सूनसान अन्धेरी रात के समय शिवाजी अकेले पन्थजी के डेरे में आये और अपना परिचय देकर बोले,——"मैने प्रतिज्ञा की है कि कण्ठगत प्राण रहते मैं गौ ब्राह्मण की रक्षा करूंगा । हमारे देवधर्म्म विरोधी यवनों के गर्व को खर्व करने के लिये भवानी ने मुझे आज्ञा दी है । भगवती की आज्ञा से मै इस में वृती हुआ हूं। आप भी ब्राह्मण हैं आपको भी उचित है और यह आपका धर्म्म है कि मेरी सहायता करें । मुझे

पूरी आशा है कि हमारी आपकी मित्रता जन्म भर निभ जायगी"। यों कह शिवाजी ने कहा कि मैं एक गाँव आपको जागीर में दूंगा। पन्थजी इस तरुणवीर के असीम साहस, अलोक साधारण देवभक्ति और अपरिमेयस्वदेशाहितैषिता में मुग्ध हो गये । शिवाजी ने उस समय उन पर कुछ ऐसी मोहनी सी डाली और बातों का जाल फैलाया कि उन्हें यह कहते ही बन आया कि जीते जी मैं तन मन से आप का साथ दूंगा और कदापि आप से बिरुद्ध आचरण न करूंगा। शिवाजी की आशा फलवती हुई, पन्थजी ने उनके साथ देने की दृढ प्रतिज्ञा की गोपीनाथ पन्थ के कहने से अफजलखाँ ने शिवाजी से भेंट करना स्वीकार किया । भेंट करने का यह नियम हुआ कि किले के नीचे किसी एक मैदान में डेरे के अन्दर भेंट हो। और अफजलखाँ केवल एक अर्दली के साथ आवें और इसी प्रकार से शिवाजी भी आकर भेंट करें। अफजलखाँ ने इसे स्वीकार किया। प्रतापगढ़ और अफजलखाँ के लशकर के बीच बड़ी ही सघन झाड़ी थी। शिवाजी ने अफजलखाँ के डेरे से अपने डेरे तक बहुत ही पतला घूम घूमाओ का एक रास्ता झाड़ी काट के साफ बनवा दिया। रास्ते के दोनों ओर सघन झाड़ियाँ ज्यों कि त्यों रहीं निर्दिष्ट समय पर पालकी पर सवार हो केवल एक अर्दली को साथ ले अफजलखाँ शिवाजी के डेरे में आये। उस समय अफजलखाँ एक महीन तञ्जेब का अङ्गरखा पंहिरे हुये थे और पास एक तलवार थी। इधर शिवाजी भी भेट के लिये आने को प्रस्तुत हुये। उन्होंने भीतर तो फोलादी कवच पहिरा और ऊपर से साधारन सूती कपड़ा, हाथ में एक तलवार, और एकही हथियारबन्द सिपाही साथ लेकर आये और बड़ी नम्रता और शिष्टाचार के साथ उठकर अफजलखाँ को स्वागत कर

ज्योंही गले मिले कि "दगा दगा"* कर चिल्लाया। कारन यह हुआ कि शिवाजी अनरखे के अन्दर बघनखाँ † लगाये हुये थे कि जिसने अफजल की बक्खी और पेट फाड़ डाला। तड़फता हुआ तड़प के अफजल ने जिवाजी पर तलवार तो चलाई परन्तु वहां तो अन्दर फोलादी कवच था, चोट न आई। उलट के शिवाजी ने एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि अफजलखाँ भूमि पर लोट गया। अफजलखाँ के अर्दली ने बड़ी बीरता से कुछ क्षण युद्ध किया और अन्त वह भी मारा गया। पालकी उठानेवालों ने चाहा कि अफजल की लहास उठाकर ले जावें परन्तु न लेजा सके इशारा करते ही शिवाजी के सिपाही आ पहुंचे और उनमे से एक ने अफजल का मुँड़ काट लिया और गढ़ में ले गया। यह बाते सुनने में बहुत हैं परन्तु वहां क्षण भर में हो गईं थीं।

शिवाजी ने पूर्वही से झाड़ी के मध्य से जो रास्ता कटवाया था उसके दोनों ओर झाड़िओं में मावली जाति के सिपाहीओं को छिपा रक्खा था सङ्केत करते ही वे लोग निकल आये और बीजापूर के लशकर पर टूट पड़े कुछ क्षण तक दोनों दल में गहरा युद्ध होता

* कुछ दिन हुये पूने में एक अति प्राचीन पुस्तक मिली है उसमें यह लिखा है कि गले मिलते समय पहिले अफजलखाँ ने शिवाजी पर वार की। क्या आश्चर्य्य ऐसाही हुआ हो और मुसल्मान इतिहास लेखकों ने स्वजाति प्रेम बश इसे उलट दिया हो।

† एक प्रकार का अस्त्र जो बाघ के पंजे के आकार का फौलादी होता है, दस्ताने में लगा और छिपा रहता है सामान्य झटके से नख बाहर निकल आते हैं। यह नख ठीक बाघ के नख के सदृश चोखे होते हैं।

रहा अन्त शिवाजी के बीरों के सन्मुख वे न टिकसके अन्त भाग निकले। शिवाजी ने उन भागते हुये सिपाहिओं का पीछा न किया। इस युद्ध में शिवाजी ने आश्चर्य्य विजय पाई, कि जिसके प्रशंसा में भूषन कवि ने कहा है:—

उतै बादशाह जू के गजन के ठट्ठ छुटे,
उमड़ि घुमड़ि मतवारे घन भारे हैं।
इतै शिवराज जू के छूटे सिंहराज कुम्भ,
करिन विदारि फारि चिक्करत कारे हैं।
फौजें शेख सैयद मुगल औ पठानन की,
मिले अफजल काहू मार न संभारे हैं।
हद्द हिन्दुआन की बिहद्द तरबारि राखि,
कैय्यो वार दिल्ली के गुमान झारिडारे हैं॥

सरलजीके मनुष्य कि जो अपने प्रतिकार्य्य में सरलता का परिचय देते हैं, वे तो अवश्य शिवाजी के इस कार्य्य से बड़ी ही घृणा करते हैं, और इसे महाविश्वासघात का कार्य्य मानते हैं। परन्तु जो दुर्दान्त शत्रुओं को पराजय करके स्वदेश की स्वाधीनता रक्षा में उद्यत रहते हैं, स्वदेश द्रोहियों के बीच स्वतन्त्र राज्य स्थापनही जिनका प्रयास है, वे ऐसे कार्य्यों को दूषन नहीं लगाते। मुसल्मानों ने चतुराई ही के बल से और विश्वासघात के सहारे से भारत विजय किया है। जिस समय महाबली पृथीराज स्वदेश की स्वाधीनता रक्षा के लिये बहुसंख्यक सैन्य लेकर युद्ध के लिये उपस्थित हुये उस समय सहा-

वुद्दीन चतुराई करके रात्रि के समय घोर अन्धकार में अपना दल ले आया और सोते हुये सिपाहियों को काट डाला । यदि ऐसा न होता तो क्या कदापि पृथीराज ऐसे बीर यों सहज में परास्त हो जाते? और भारत पराधीनी की बेड़ी पहिरता? जिनके पूर्वजों ने हम लोगों को पराजय किया है उनके साथ ऐसा करना कदापि अनुचित नहीं कहा जा सक्ता। "सठंप्रतिसठंकूर्यात्" यह शिवाजी की नीति थी।

सह्याद्रि के पश्चिम समुद्र प्रयन्त भूखण्ड को कङ्कन राज्य कहते हैं। बीजापूर के सैन्यों को पराजय करने के उपरान्त कोकन (कङ्कन) प्रदेश का अधिकाँश शिवाजी ने अपने अधिकार में कर लिया था। इसके उपरान्त शिवाजी ने पनैलागढ़ पर चढ़ाई की। यह किला बीजापूर की अमलदारी में अभेद्य दुर्ग माना जाता था । इस गढ़ के विजय करने में शिवाजी ने अपूर्व कौशल और असीम साहस का परिचय दिया। शिवाजी ने सलाह कर अपने कई एक सेनानायकों से बनावटी बिवाद किया, और आठ सौ सिपाहियों के साथ कई एक सेनानायक शिवाजी के दल से निकल गये और पनैला दुर्ग के किलेदार से जा मिले और नौकरी करने की प्रार्थना की । किलेदार ने इन लोगों के कौशल को बिना समझे किले में नौकर रख लिया। इधर शिवाजी ने गढ़ पर चढ़ाई की। गढ़ के एक ओर कुछ ऊंचे ऊंचे वृक्ष थे। शिवाजी से छूट के जिन सिपाहियों ने गढ़ में नौकरी कर ली थी औसर पा रात्रि के समय शिवाजी के दलवालों को सङ्केत किया । इशारे के पातेही शिवाजी के वीरगण पेड़ों पर से चढ़ के किले में कूद गये और बड़ी बीरता से युद्ध कर गढ़के द्वार को खोल दिया। कुछ क्षण तक तो घोर युद्ध हुआ अन्त शिवाजी ने गढ़ फते कर लिया। इसी पर भूषन ने कहा है:—

छूटत कमानन के तीर गोली बानन के,
मुसकिल होत मुरचानहू की ओट में ।
ताही समै शिवराज हुमकि के हल्ला कीन्हो,
दावा बाँधि पर्‍यो हल्ला बीर भट चोट में ॥
भूषन भनत तेरी हिम्मत कहां लौं गिनौ,
किम्मत यहां लग है जाके भट जोट में ।
ताव दै दै मूंछन कँगूरन मै पांव दै दै,
घाव दै दै अरिमुख कूद परे कोट में ॥

इसी प्रकार बारम्बार के विजय से शिवाजी की ऐसी प्रसिद्धी होगई कि दूर दूर से हिन्दू वीरगण आ आकर शिवाजी का दल पुष्ट करने लगे । शिवाजी का रिसाला दूर दूर तक धावा मारने और मुसलमानी रियासतों को लूटने लगा । शिवाजी का आतङ्क दूर दूर तक फैल गया । लोग डरते और घबड़ाते थे कि न जाने किस दिन किधर से शिवाजी चढ़ धावे । बीजापूर के आस पास तक शिवाजी ने लूट मार मचा दी ।

कोटगढ़ ढाइयतु एकै बादशाहन के,
एकै बादशाहन के देश दाहियतु है ।
भूषन भनत महाराज शिवराज एकै,
शाहन के सैन पर खग्ग बाहियतु है ॥
क्यों न होहिं बैरिन की बधूवर, बौरीन सी
दौरन तिहारे कहूं क्यों निबाहियतु है ।

रावरे नगारे सुने बैर वारे नगरन,
नैनवारे नदन निवारे चाहियतु है ॥

शिवाजी की उद्दण्ड बीरता और वैभव को बढ़ते देख कर वीजापूर के बादशाह की क्रोधाग्नि धधक उठी। उसने अपना एक दूत शिवाजी के निकट यह कहला के भेजा कि अभी तक अच्छा है यदि तुम हमारी वश्यता स्वीकार करलो। दूत ने आकर शिवाजी से अपने प्रभू की आज्ञा कह सुनाई। दूत के मुह से बादशाह के अभिमान पूर्ण वाक्यों को सुनकर शिवाजी ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "तुम्मारे स्वामी को मेरे ऊपर आज्ञा करने का क्या अधिकार है तुम कुशल पूर्वक यहां से चले जाओ नहीं तो तुम्हे कष्ट भोगना पड़ेगा"। शिवाजी के इस रूखे उत्तर को सुन दूत वीजापूर लौट आया और अपने स्वामी से शिवाजी का सन्देशा कह सुनाया। दूत के मुह से अभिमान पूर्ण उत्तर सुन बादशाह को बड़ाही क्रोध हो आया और इस दर्प को दमन करने के लिये अनेक सैन्यो के सहित स्वयं बादशाह ने शिवाजी पर चढ़ाई की। दो वर्षलों युद्ध चलता रहा इसमें मरहट्टों की बहुत सी जागीर वीजापूरवाले के अधिकार में चली गई परन्तु अन्तिम लाभ का भाग शिवाजी की ओर रहा।

सन् १६४९ में कि जब वीजापूर के बादशाह ने शिवाजी के पिता शाहजी को कैद कर लिया था, उस समय शाहजी को मुधोल का जागीरदार वाजेधुरपुरा नामक मनुष्य ने विश्वासघात से गिरफ्तार करवा दिया था। गिरफ्तार होने के उपरान्त शाहजी ने अपने पुत्र शिवाजी को लिखा था कि घोरपुरे ने मेरे साथ बड़ा विश्वासघात किया है इसलिये तुम्हारी सच्ची बीरता तो तभी है कि इस

दुष्ट से तुम अपने पिता का बदला लो। तेरह वर्ष के उपरान्त कि जिस समय वीजापूर से युद्ध हो रहा था, शिवाजी को एक ऐसा सुयोग मिला कि पिता का पुराना बैर स्मरण कर घोरपुरे पर चढ़ धाये और सपरिवार घोरपुरे को मार मिटाया, उसके ग्राम में आग लगा दी, उसका नाम निशान न रक्खा। जब शाहजी को यह समाचार मिला तब ऐसे पुत्र से मिलने की उन्हें बड़ीही उत्कण्ठा हो आई। बीस वर्ष के उपरान्त शाहजी अपने पुत्र शिवाजी से मिलने चले। इधर शिवाजी पिता का आगमन सुन बड़े उत्साह और उमङ्ग से अगवानी के हेतु नङ्गे पांओं बारह मील तक आये। पिता को देखतेही पृथ्वी पर लोट कर साष्टाङ्ग दण्डवत प्रणाम किया। प्रेमाश्रु बहाते वात्सल्य और प्रेम से गद गद हो शाहजी ने प्यारे सपूत को गले से लगा लिया। शिवाजी ने बड़े आगत स्वागत से निज पिता को लाकर गद्दी पर बिठाया और आप पिता की जूती उठाकर खड़े रहे! धन्य वीर शिवाजी! धन्य है तुम्हारी बीरता और पितृभक्ति को। क्यों न हो जो जन निश्चल निस्कपटता से देव पितृ भक्ति को हृदय में धारण करते हैं वेही इस लोक में अन्न, जन, लक्ष्मी, यश, विजय को प्राप्त हो परलोक में उच्च पदवी को प्राप्त होते हैं। महाजनों की महाशयता उनके कर्म्मों ही से प्रतीत होती है। शिवाजी के शील से बड़ेही प्रसन्न होकर शाहजी ने आशिर्वाद दिया कि पुत्र तुम सदा विजयी हो और सदा राज्य लक्ष्मी तुम पर सदय रहें। कुछ दिन रहने के उपरान्त शाहजी पुत्र से बिदा हो अपने स्थान को गये। उस समय शिवाजी की पैंतीस वर्ष की अवस्था थी।

उस समय शिवाजी के अधिकार में समस्त कोकन प्रदेश, कल्यान से गोआतक और बीमा से वर्दातक था, कि जिसकी लम्बाई

१३० मील और चौड़ाई सौ मील की थी । शिवाजी के आधीन उस काल में पचास हजार पैदल और सात हजार सवार थे, कि जिसमें प्रति सिपाही प्रभु भक्त, रणकुशल और वीर थे ।

शिवाजी सदा युद्ध विग्रह में अपने दिन विताया करते और उसी से फौज का खर्च चलाते थे । कुछ दिन के उपरान्त पुनः बीजापूरवाले ने एवीसिनीया के रहनेवाले रणकुशल सेनानायक को बड़े दलबल से शिवाजी पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी । इस बहादुर ने अपने रणकुशलता से शिवाजी को पनैला दुर्ग में घेर लिया और खूबही लड़ा अन्त भवानीभक्त शिवाजी ने उसे भी परास्त कर विजय पाई । शिवाजी के चतुराई के आगे उसकी वीरता कुछ भी काम न आई और अन्त हार कर लौट गया । इसके लौटने पर उसके प्रभु को ऐसा क्रोध हुआ कि उस एवीसीनीयावासी सेनानायक को प्राण दण्ड दिया । इस युद्ध के उपान्त शिवाजी ने बीजापूरवाले से सन्धी करली और उसके अधिकार में लूट मार करना छोड़ दिया ।

जिस समय औरङ्गजेब अपने पिता को पदच्युत करने के लिये आगरे चला थां उस समय उसने अपने कई एक सरदारों को इस अभिप्राय से शिवाजी के निकट भेजा था कि तुम इस कार्य्य में मेरी सहायता करो । परन्तु वीर शिवाजी इस अन्याय कर्म्म के साथ देने में सहमत न हुये वरन औरङ्गजेब को बहुत कुछ धिकारा और उसने जो पत्र भेजा था उसे कुत्ते की पूंछ में बन्धवा दिया । दूतों ने लौट कर औरङ्गजेब को शिवाजी की कहन सुनाई इस पर औरङ्गजेब को बहुतही बुरा लगा और शिवाजी के ओर से उसके हृदय में बैर का अंकुर जम गया । औरङ्गजेब द्वेष से शिवाजी को "पहाड़ का चूहा" कहा करता था ।

उधर औरङ्गजेब अपने बूढे पिता को कैद कर आप सिंहासन पर बैठा और इधर शिवाजी ने बीजापूर के स्वामी से सन्धी करली और मुगलों के अधिकार पर हाथ डालने लगे । औरङ्गाबाद तक शिवाजी ने अपना अधिकार जमा लिया । उस समय दक्षिण का सूबा सायस्ताखाँ के शाशनाधीन था । औरङ्गजेब ने मरहट्टों को दमन करने के लिये सायस्ताखाँ को आज्ञापत्र भेजा । आज्ञा के पातेही प्रबल दल से सायस्ताखाँ ने शिवाजी पर चढ़ाई की उस समय शिवाजी की अवस्थिति रायगढ़ में थी । इस चढ़ाई का समाचार पातेही शिवाजी रायगढ़ से सिंहगढ़ में आ रहे । उधर सायस्ताखाँ पूने पर अपना अधिकार कर उसी महल में रहने लगे कि जिसे दादाजी कर्णदेव ने शिवाजी और उनकी माता के रहने के लिये बनवाया था । सायस्ताखाँ ने बड़ी सावधानी और चैतन्यता से महल और नगर की रक्षा में सैन्य नियत कर दी थीं और यह आज्ञा प्रचार करदी थी, कि बिना आज्ञा के कोई हथियारबन्द मरहट्टा नगर के अन्दर न आने पावे । परन्तु बीर शिवाजी के लिये यह सावधानी कुछ भी काम न आई । उन्होने अपना कार्य्य सिद्ध करही लिया ।

एक दिवस रात्रि को कि जिस समय घोर अन्धेरी छा रही थी, घाट बाट कुछ भी नहीं सूझता था आधी रात का समय था कि दैव योग से किसी की बरात पूना को जा रही थी, उसी समय परम साहसी धीर बीर शिवाजी केवल पचीस सिपाहियों को साथ ले उस बरात में जा मिले और बराती बन हँसते बोलते पूना के अन्दर जा दाखिल हुये और साथही सीधे अपने मकान की ओर चले । निज गृह होने के कारण शिवाजी को उसके रास्ते और सब हाल विदितही

था। एक बेरही साथीयों के साथ उस स्थान में पहुंचे कि जहां वह अपनी बेगमों के साथ सो रहा था । * जातेही शिवाजी ने ललकारा। उस समय सायस्ताखाँ इस अकस्मात उपद्रव से ऐसा घबराया कि अपनी बीरता भूल गया। उससे कुछ भी न बन पड़ा । शिवाजी के प्रताप से घबड़ा के एक खिड़की से कूद कर भाग निकला । भागती समय किसी मरहट्टे की तलवार से उसकी हाथ की एक उँगली कट गई। परन्तु उसके पुत्र और रक्षकों को शिवाजी ने वहांही समाप्त किया और बहुत सी मसालें बाल आनन्दध्वनी करते शिवाजी सिंहगढ़ को लौट आये।

प्रातःकाल होतेही मुगलों के सवारों ने सिंहगढ़ पर चढ़ाई की परन्तु शिवाजी ने उन्हे आने से न रोका । वे अपने जोम से भरे आगे बढ़ते चले आये और गढ़ के नीचे तक पहुंच गये तब शिवाजी ने किले के ऊपर से तोपों की बाढ़ दागी जिस्से कि अधिकांश मुगल सैनिक तो वहाहीं मृत्यु को प्राप्त हुये और बाकी के बचे बचाये अपने प्राण ले भाग निकले। शिवाजी ने एक सर्दार को उनके पीछे कर दिया कि जिसने दूर तक उनका पीछा किया परन्तु फिर वे जमने का साहस न कर सके और इधर उधर भाग निकले। मरहट्टों से पराजय हो मुगलों का यह पहिला अवसर था । इस आश्चर्य्य और कुतूहल जनक बिजय से शिवाजी की बड़ीही विख्याती हुई अबलों उस प्रान्त वाले शिवाजी के इस बीरता का यशोगान करते हैं। यथार्थ में यह कार्य्य भी ऐसेही बीरता और साहस का हुआ। इसके उपरान्त शिवाजी अपने घुड़सवारों को ले औरङ्गजेब के अधिकृत स्थानों पर अपना अधिकार जमाने लगे।

---

* अनुमान होता है कि कमन्द के सहारे शिवाजी महल पर चढ़े थे।

इतने दिनों तक तो शिवाजी दोनों घाटों ही तक धावा मारते थे। परन्तु अब बहुत दूर दूर तक जाने लगे। पूना से डेढ़ सौ मील की दूरी पर सूरत नगर है। उस समय अर्थात् सन् १६६४ ईस्वी में यह बड़ा समृद्धिशाली नगर था। बड़े बड़े धनाढ्य और बिभवशाली सौदागर सूरत में बसते थे। रोजगार बहुत ही चढ़ा बढ़ा था। केवल अरब और फारस से यहां सालीना पचास लाख का सोना आता था। और दो ऐसे भारी सौदागर थे कि जो संसार भर में धनाढ्य माने जाते थे। दूसरे मक्के के जाने के लिये मुसलमान यात्री इसी स्थान में जमा होते थे कि जिनसे कर स्वरूप सालीना तीन किरोड़ रुपये की आमदनी दिल्ली की बादशाही को मिलती थी। शिवाजी ने इसी सूरत शहर पर धावा करने का बिचार किया और अपने दल बल को बटोर निधड़क सूरत पर चढ़े। शिवाजी के हृदय में भगवती की ऐसी दृढ़ अविचलित भक्ती थी कि जिस भक्तिबल के प्रभाव से सदा निसङ्क और निडर रहा करते थे।

कहते हैं कि शिवाजी सूरत में गुप्त भाव से भेष बदल कर गये और चार दिन तक नगर में घूम घूम कर खूबही थाह ली। तद-उपरान्त अपनी सैन्य को कि जिन्हें इधर उधर छोड़ आये थे उनमें से चुन के चार हजार सवारों को अपने साथ ले दिन दोपहर सूरत पर जाचढ़े और भली प्रकार शत्रुदल को मर्द्दित कर छः दिन तक खूब ही नगर को मनमाना लूटा। उस समय सूरत में अङ्गरेजों की भी कोठियां थीं कि जिसके मालिक सर जर्ज अक्सेनडेन साहब थे। इन्होंने अपने मालिक तथा दूसरे कई एक महाजनों की सम्पत्ति बड़ी दिलेरी से बचा ली, कि जिसके लिये औरङ्गजेब ने जर्ज साहब को बड़ी शाबासी का पत्र लिखा और कुछ कर भी माफ़ कर दिया था। इस देशवालों से अङ्गरेजों का यह पहिला मुकाबिला था।

सूरत विजय करके शिवाजी अपने रायगढ़ के किले में आये। उस समय सूरत से यह अतुल विभव धन धान्य, मणिरत्न, हाथी घोड़े साथ ले आये थे। रायगढ़ में आतेही शिवाजी ने सुना कि सत्तर वर्ष की अवस्था में उनके पिता का देहान्त हो गया है। सिंहगढ़ में आकर बड़े समारोह और बिधि विधान पूर्वक शिवाजी ने पिता का श्राद्ध किया और श्राद्ध करने के उपरान्त पुनः रायगढ़ में लौट गये।

मरती समय शाहजी के अधिकार में बंगलोरके चारों ओर बहुतसी जागीर थी। सिवाय इसके अरती, तंजोर, और पोर्टो, नोभो, भी इन्ही के अधिकार में था।

शिवाजी जैसेही बीर थे वैसेही निज धर्म्म कर्म्म और ईश्वर में नेष्ठावान् और गुणग्राही भी थे। किसी विषय का गुणीजन जो इनके निकट जाता विमुख कभीं नही लौटता था। इनकी गुणाविग्राहिता दूर दूर तक प्रसिद्ध हो रही थी। उस समय भूषण नामक अत्यन्त प्रशंसनीय एक बड़ा कवि प्रसिद्ध राजा छत्रशाल पन्ना वाले के दरबार में था शिवाजी को गुणग्राहक सुन भूषण बुंदेलखण्ड से शिवाजी के दरबार में आया और उनकी प्रशंसा में यह कवित्त पढ़ाः—

इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सु अंभ पर,
रावण सुदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर शंभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबांह पर राम द्विजराज है॥
दावा द्रुमदुंड पर चीत्ता मृगझुंड पर,
भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है

तेज तिमिरंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छवंस पर सेर सिवराज है ॥

भूषण को पांच हाथी और पचास हजार रुपये दिये और बड़े आदर सत्कार से कविराजको अपने दरवार में रक्खा।

पिता के देहान्त के उपरान्त शिवाजी ने बिचारा कि अबतक पूज्य पिता बैठे थे उनके बैठे राजा बनना उचित न था परन्तु अब उनका देहान्त हो गया इसलिये अपना राज्य निश्चतकर राजा बनना चाहिये। अहा शिवाजी की पितृभक्ति और मर्य्यादा कैसी प्रशंसनीय थी!

सन १६६४ ईसवी मे शिवाजी ने अपना राज्यस्थापन कर टकसाल बनवाई और अपने नामका सिक्का ढलवाया।

आज शिवाजी की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। दूर्धर्शयननो के गर्वको खर्वकर शिवाजी ने हिन्दू राजस्थापन किया। यवनो के कराल द्वेषाग्निसे झुलसे हुये हिन्दूओं के हृदय शीतल हुये। निज धर्म्म कर्म्म रक्षा के लिये शरण मिली कि जिसकी प्रशंसा में भूषण ने कहा है:—

बेद राख्यो विदित पुरान राख्यो सारसुत,
राम नाम राख्यो अति रसना सुघरमें।
हिन्दुनकी चोटी रोटी राखी है सिपाहिनकी,
काँधेमें जनेऊ राख्यो माला राखी गलमें।
मीड़ राखे मुगल मरोड़ राखे बादशाह,
वैरी पीस राखे बरदान राख्यो करमें।
राजनकी हद्द राखी तेगबल शिवराज,
देव राख्यो देवल स्वधर्म्म राख्यो धारमें॥

मारकर बादशाही खाक शाही कीन्ही जिन
जेर कीन्ही जोर सो लै हद्द सब मारेकी
खिस गई सेखी फिस गई सूरताई सब
हिस गई हिम्मत हजारौ लोग प्यारेकी
बाजत दमामे लाखौं धौंसा आगे धुरजात
गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़े भारेकी
दूल्हो शिवराज भयो दच्छनी दमालेवाले (?)
दिल्ली दुलहिन भई शहर शितारे की ॥

शिवाजी ने सोचा कि जलथल दोनोंपर समबलबिना रक्खे पूर्ण रूपसे शत्रु पराजित नहीं हो सक्के इसलिये उन्होंने बहुतसी रण नौकायें बनवाई। इन जहाजों पर चढ मरहट्टे जलपथ से दूर दूर तक लूट मार करते और मक्के जाने वाले यात्रीओं को लूटते कि जिसमे बड़ी लूट उनके हाथ लगती। सन १६६९ ईसवी के फरवरी मे शिवाजी ने बड़ी तैयारी से जलपथ द्वारा युद्धकी तैयारी की। उस समय शिवाजी अट्ठासी जहाज लेकर चढ़े थे। जिनमें तीन जहाज बहुत बड़े थे कि जिनमें तीन तीन मस्तूल लगते थे। बाकी ऐसे थे कि जिनमें का बोझा एक एक जहाज पर लदता था। इन जहाजों पर चार हजार सैन्य थी। यह चढ़ाई शिवाजी ने वरसिलोर पर की थी कि जो गोवा से १३० मील दक्षिण की ओर था। काल का भी क्याही प्रभाव है कि आज उस स्थान का नक्से तक में भी नहीं है!

समुद्र की जल वायू से शिवाजी का स्वास्थ बहुत ही बिगड़ गया और वायू प्रतिकूलता के कारण बड़े कष्ट सहने पड़े परन्तु केवल सा-

हस के बल से यह निज उद्योग में कृत कार्य्य हुये और बहुत कुछ लूट और धन लेकर निज राजधानी में लौट आये । यही प्रथम और अन्तिम अवसर था कि स्वयम् शिवाजी ने इस धूम धाम से जल युद्ध की यात्रा की थी। यह चढ़ाई सन् १६६५ ई० के प्रारम्भ में हुई थी।

निज राजधानी में पहुंचते ही इन्हें सोध लगी कि मक्के के यात्रियों को लूटने के कारन कोभित होकर औरङ्गजेब ने अधिक सैन्य के साथ अम्बराधिपति महाराज जैसिंह और दिलेरखाँ को भेजा है कि जो उनकी अमलदारी तक पहुंच गये हैं।

शिवाजी ने अपने मन्त्रियों से विचार कर यह स्थिर किया कि इनसे युद्ध कर सन्धी करलेनी चाहिये । शिवाजी ने अपनी ओर से रघुनाथ पन्थ न्याय शास्त्री को सन्धी के प्रस्ताव के लिये जयसिंह के पास भेजा। महाराज जयसिंह की दूत से बहुत कुछ बातें हुईं। और दूत के लौट आने पर स्वयम् शिवाजी थोड़े से मनुष्यों को साथ ले कर जैसिंह की भेट को गये । डेरे के निकट पहुंच कर शिवाजी ने अपने आने का समाचार कहला भेजा । जयसिंह ने एक सर्दार को अगवानी के लिये भेजा और डेरे के द्वार पर से आप जाकर अगवानी ली और बड़े सत्कार के साथ लाकर शिवाजी को अपनी दाहिनी गद्दी पर बैठाया । सन्धी के नियम के विषय में शिवाजी ने कहा कि इस समय मेरे आधीन बत्तीस किले हैं जिनमें से बीस किले बादशाह को लौटा दूंगा और बारह किले अपने आधीन रक्खूंगा कि जो निज राज्य के चारों ओर हैं। सिवाय इसके लाख "पैगोडा" खिराज के दूंगा। परन्तु नुक्सानी की पूर्त्ति के लिये शिवाजी ने बड़ी चतुराई से यह कहा कि बीजापूर इलाके पर "सरदेसमुखी अर्थात् चौथ लगाई जावे और उसकी उगाही मेरे जिम्मे हो । शिवाजी को

इन बातों की मंजूरी करवाने की इतनी आतुरता थी कि उन्होंने चालीस लाख "पैगोडा" अर्थात् दस लाख रुपये "पेशकस" अर्थात् नजर देना स्वीकार कर लिया और कहा कि सालीना किस्त कर मैं इसे चुका दूंगा।

औरङ्गजेब ने शिवाजी की सब शर्तों को मंजूर की परन्तु चौथ के बारे में कुछ उत्तर न दिया कि जिसका शिवाजी ने यह तात्पर्य्य निकाला कि चौथ के बारे में कुछ न कहना यह भी एक प्रकार की मंजूरी है। एवं तदनुसार चौथ जारी की। भारतवर्ष में चौथ की यही प्रथम प्रथा हुई। इस प्रकार की चतुराई से शिवाजी ने इस बड़ी मुहीम को भी टाला।

औरङ्गजेब की फौज ने बीजापूर पर चढ़ाई की शिवाजी ने उस चढ़ाईमें अपने वैमातृक भाई विनि कार्जीके आधीनी में दो हजार घुड़सवार और आठ हजार पैदल मरहट्टे दिये। इन योधाओं ने बीजापूर के मैदान में बड़ी बहादुरी दिखाई।

सन् १६६६ में औरङ्गजेब ने शिवाजी को अपने दरबार में बुलाने के लिये निमन्त्रणपत्र भेजा। इस निमन्त्रण को पाकर शिवाजी अपने पुत्र शम्भू जी को और पांच सौ सवार तथा एक हजार मावली सैन्य को साथ लेकर दिल्ली चले। भूषन कवि भी इनके साथ ही था।

शिवाजी के पहुंचते ही दिल्ली में धूम धाम मच गई। नित्य सहस्रों मनुष्य सिवाजी को देखने आने लगे। बादशाह ने अपने दरबार में शिवाजी को बुलवाया परन्तु मदान्ध औरङ्गजेब उस समय शिवाजी की बीरता और प्रताप को भूल गया और शिवाजी को तीसरे दर्जे के कर्म्मचारीओं के आसन पर बिठलाना विचारा। दर्बार में पहुंचते ही शिवाजी को ज्यों ही अपने बैठक की खबर लगी कि

क्रोध से उनका हृदय कांप उठा परन्तु दूर दर्शी शिवाजी बादशाह से बिना जुहार मुज्रा किंये दबार से लौट आये।

बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतन को गनुभारो। भूषन आप तहां शिवराज लियो हरि औरङ्गजेब को गारो॥ दीनो कुब्जाव दिलीपति को अरु कीनो उजीरन को मुह कारो। नायोन माथही दच्छिन नाथ न साथ में सैन न हाथ हथ्यारो॥

सवन के ऊपर खडो रहन योग ताहि तहां खड़ो कियो जाय जारियन के नियरे। जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि मन कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे॥ भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यो सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे। तमकते लाल मुख शिवा को निरख भयो, स्याह मुख नौरङ्ग सिपाह मुख पियरे॥

डेरे पर आके शिवाजी ने लौट जाने के लिये कहला भेजा परन्तु औरङ्गजेब ने कहा कि अभी कुछ दिन ठहरें। बादशाह की भीतरी इच्छा यह थी कि प्रबल बैरी शिवाजी हाथ आ गया है अब इसे जन्म भर न छोडूंगा। इसी अभिप्राय से शिवाजी को रोका और जहां शिवाजी थे वहां इस बात की चौकसी करवा दी कि कहीं निकल न भागे।

कुछ दिनों के उपरान्त शिवाजी ने कहला भेजा कि हमारे लसकर को यहां की जल वायू माफकत नहीं है इसलिये मैं चाहता हूं कि अपनी सैन्म को दक्षिण लौटा दूं । बादशाह ने शिवाजी की इस प्रार्थना को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया क्योंकि उसने सोचा कि कह और भी उत्तम होगा कि शिवाजी अपनी फौज को लौटा के आप अकेला मेरी राजधानी में रहे ।

फौज के लौट जाने पर नगर में यह प्रसिद्ध हो गया कि शिवाजी बहुत बीमार हैं । यहां तक कि उठ बैठ नहीं सक्ते । शिवाजी नित्य मनो मिठाई बड़े बड़े टोकरों में भर नगर और नगर प्रान्त में ब्राह्मण और भिखारिओं को बटवाने लगे। कई दिनों तक नित्य योंहीं मिठाई बटती रही और पहरेवालों को निश्चय हो गया कि भीतर से बड़े बड़े मिठाइयों के टोकरे नगर में बटने के लिये जाया करते हैं तब एक दिवस गोधूली के समय एक टोकरे में आप और दूसरे में निज पुत्र शम्भु जी को बैठा मजूरे के सिर पर रखवा बेधड़क नगर से बाहर निकल आये । वहां पहिले ही से अति उत्तम कसे कसाये दो घोड़े खड़े थे कि जिन पर शिवाजी और शम्भू जी बैठ लिये और वहां से चलते हुये । दूसरे दिन मथुरा जी पहुंचे वहां किसी अपने मित्र के यहां पुत्र शम्भु जी को छोड़ आप साधू का भेष बना दक्षिण की ओर चल निकले । इनके जाने के उपरान्त उनके मित्र ने शम्भू जी को भी मकान पर पहुंचा दिया । सन् १६६६ के दिसम्बर में शिवाजी भी अपने किले में जा दाखिल हुये ।

जयसिंह उस समय बादशाह की आज्ञा से बीजापूर में युद्ध कर रहे थे।जयसिंह को कुछ अधिक सैन्य की आवश्यकता हुई इसलिये बादशाह से सहायता के लिये सैन्य मांग भेजी । धूर्त्त औरङ्गजेब को

किसी पर भी विश्वास न था। कर्म्मचारीयों में जो अधिक प्रबल हो जाता था चाहे वह कैसा भी विश्वासी क्यों न हो उसके ध्वन्श साधन में सचेष्ट रहता। इसी लिये जयसिंह को नीचा दिखाने के लिये मदत न भेजी। अन्त विवश हो जयसिंह बीजापूर से लौटे और बाटही में उनका प्राणान्त हूआ। इसी अवसर में शिवाजी ने पुनः अपने सम्पूर्ण किलों पर धीरे धीरे अधिकार जमा लिया। उधर औरङ्गजेब ने सोचा कि कहीं शिवाजी बीजापूरें से मिल न जाये इसलिये उन्हें एक जागीर और राजा का खिताब भेजा।

ईसवी० सन् १६६७ में बीजापूर के सुलतान के मरने पर उसके उत्तराधिकारी से शिवाजी ने तीन लाख का सालीना और गोलकुण्डे के सुलतान से पांच लाख रुपये सालीना करके ठहराय लिये और खान देशवाले से चौथ लेने लगे। इस काल में शिवाजी ने अपने राज्य का खूबही बिस्तार फैला लिया था। उत्तर में नर्मदा नदी के अपर पार में मुगलों की अमलदारी थी शिवाजी ने उसे भी अपने अधिकार में कर लिया और दक्षिण में मैसौर तक निज अधीन कर लिया था। इस समय औरङ्गजेब अफगानिस्तान के युद्ध विग्रह में लग रहा था। इस सुयोग को पा शिवाजी ने कोकन और दोनों घाटों पर भी निज अधिकार जमा लिया।

इसके उपरान्त कुछ काल तक लड़ाई भिड़ाई को छोड़ निज राज्य प्रवन्ध करने मे शिवाजी ने चित्त लगाया। अपने राज्य के बड़े बढ़े पदों के अधिकारी ब्राह्मणोंही को बनाया था। किसानो को किसी प्रकार का कष्ट न हो, किसी पर कोई अन्याय न करे, निर्बलको जबर न सतावे इत्यादि विशयों पर शिवाजी की सदा तीव्र दृष्टि रक्ष करती। धर्त्ती की जो उपज होती थी उसका यह नियम

था कि पांच भागमें तीन भाग किसानको मिलता और दो भाग सरकारमें जमा होता। मालगुजारी उगाही के लिये यह प्रबन्ध था कि दो दो तीन तीन ग्रामोंपर एक एक कारकून, एक एक छोटे जिलोंपर तरफदार, कई तरफदारों पर एक सूबेदार : जिमींदार देश मुख या देश पाँड़े कहाते थे। शिवाजी किसानोपर जो कर स्थापित कर देते थे उसी अनुसार वे उगाही करते और सरकारमें दाखिल कर देते। फौज को खजाने से तनखांह माहवारी दी जाती थी। इनकी फौजमें मावली जाति वालेही अधिक थे। तरवार, ढाल, भाला, बर्छी और बंदूक इनलोंगों का प्रधान हथियार था। पैदल सिपाहीओं को माहवारी तीनं चार रूपये से दस बारह रूपये तक तनखाह मिलती थी। रिंसाले में दो भेद थे। एक वर्गी और दूसरे सिल्लीदार कहाते थे। वर्गीवे कहे जाते थे कि जो सरकारी घोड़े से काम देते थे। उन्हे माहवारी छः सात रूपये से पन्द्रह बीस रूपये तक मिलते थे। सिल्लीदार वे लोग थे कि जो निजका घोड़ा रखते थे। इन्हे माहवारी पन्द्रह बीस से चालीस पचास रूपये मिलते थे। लूटमें जो कुछ मिलता वह सरकारी खजाने मैं दाखिल होता और लूटने वालों को उपयुक्त इनाम मिलता। सैन्यमें यह बन्दोबस्त था कि दस सिपाही पर एक नायक, पचास सिपाही पर एक हवलदार, और सौ सिपाही पर एक जुमलेदार होता था। हजार सिपाही का अपसर एक हजारी और पांच हजार के ऊपर सरनौबत अर्थात् सैन्याध्यक्ष कहा जाता था। इसी प्रकार रिसाले में भी था; अर्थात् पचीस सवार पर हवलदार १२५ पर जुमलादार ६९५ पर सूबेदार और ६२५० सवार जिसके आधीन हो तो वह पांच हजारी कहाता था। इन सवारोंके घोड़े बहुत बड़े नही वरनटांगन होते थे, जो कि जं-

गल और पहाड़ो पर बड़ी तेजी और सुगमता से जाते थे। ये घोड़े ऐसे सिखाये हुये थे कि शत्रुओं के दलमें घुस जाते कि जहां वे लोग भोजन वनाते होते। वहां जाकर ऐसा उपद्रव मचाते कि उनका भोजन नष्ट भ्रष्ट करके लौट आते।

क्वारके महीने में नवरात्रि पर शिवाजी महिष मर्दिनी दशभुजा दुर्गा की पूजा बड़े समारोह से करते और विजय दशमी पर फौजकी हाजरी लेते एवं जहां कही चढाई करनी होती तौ इसी दिन करते।

आफगानिस्थान से लौटकर बाहरी चापालोसी दिखाकर औरङ्गजेव ने पुनः शिवाजी को अपने दरवार में बुलाना चाहा था परन्तु उसकी यह चेष्टा फलवती न हुई। शिवाजी औरङ्गजेव के कपट जाल में न आये। परन्तु दक्षणी देशों पर बराबर अपना अधिकार फैलातेही चले गये। शिवाजी का यह प्रभाव दिनरात औरङ्गजेव के हृदय को डाहता और वह मनोमन विचार किया करता कि—

औरङ्ग यों पछिताय मन करतो जतन अनेक।
शिवा लेयगो दुरगसब को जाने निशि एक॥

निदान विवस हो औरङ्गजेव ने शिवाजी से घोर संग्राम करना ठना इस समाचार के मिलने से बीर शिवाजी का हृदय बादशाह के कोप से नेक भी न दहला, वरन द्विगुणित साहस और उत्साहसे सच्चे बीर पुरुषों की नांई निजवीर धर्म्मके रक्षा में यत्न शील हुये। और मुग़्लों के अधिकृत कई एक किलोंपर विजय पताका उड़ाई। इनमें सिंहगढ़ को विजय करने मे बड़ीही बीरता दिखाई यह बड़ाही विकटगढ था; परन्तु शिवाजी का एक बीरवर सैनिक अपने मावली

सिपाहीओं को ले दीवार फांदकर किलेके अन्दर घुस गया और बड़ी बहादुरी से विजय पाई। इस युद्धसे शिवाजी ऐसे प्रसन्न हुये कि अपने बहादुरों को निज हाथ से कड़े पहिराये और बड़ी सावासी दी। योंहीं पुरन्दर मासके किलेको भी जीत के इन्हो ने अपने अधिकार में कर लिया। इसके उपरान्त चौदह हजार सैन्य लेकर शिवाजी दुवारा सूरतपर चढ़े और तीन दिन तक मन माना लूटा।

दिल्ली दलन गजाय कें, सर सरजा निरसंक। लूठ लियो सूरत सहर, बङ्क करि अति डङ्क। बङ्क करि अति डंक करि स संक कुलिखल। सोचत चकित, भरोचच्चलित विमोचत चखजल। हद्ठद्ठिक मन, कट्ठट्ठिक सुन रट्ठट्ठिलिय, सद्दद्दसदिवि भद्दद्दिविभई रघ्घुध दिल्लीय॥

लौटती समयें राह में जङ्गली नामक नगर को लूटा कि जहां से बहुत सा धन हाथ लगा। उधर शिवाजी के प्रतापराव् नामक सेना नायक ने खान देशपर चढ़ाई की और विजय कर उसपर चौथ लगाई। मुगलों के अधिकार में चौथ लगाने का शिवाजी का यह पहिला मौका था।

सूरत से लौटती समय दाऊदखाँ नामक एक मुगल सेनापति ने पांच हजार घुड़सवारों से शिवाजी का मुहाना रोका परन्तु शिवा जी ने युद्धमें उसे पूर्ण रूपसे परास्त किया। इस समाचार को पाकर बड़े क्रोध से चालीस हजार सेना के साथ औरङ्गजेब ने मोहब्बतखाँ को शिवाजी पर भेजा। वीर धुरन्धर शिवाजी ने भी अपने प्रधान सेना नायक मोरो पन्थ और प्रतापराव् को युद्धके लिये

भेजा। न जाने शिवाजी का भाग्य कैसा प्रबल था कि बड़ी बीरता के साथ इनके सेना नायकों ने मोहब्बतखाँ को ससैन्य परास्त किया। मुगलों की सैन्य हारकर हट गई। यह युद्ध सन् १६६३ ईसवी में हुआ था। बस युद्धमें मुगलों की बहुत सैन्य कटी और पूर्ण रूपसे पराजय हुई। मुगलों के १२ प्रधान प्रधान सेना नायक मारे गये और कई एक को मरहट्टों ने कैदकर लिया। इन कैदियों को शिवाजी ने अपने निकट रख बड़ी खातरी से उनकी सेवा करवाई और अन्त उन्हे छोड़ दिया। आजतक मुगलों से और मरहट्टों से जितने युद्ध हुये थे उनमे यह युद्ध प्रधान था इस युद्धमें मुगलों के सब हौंसले पस्त होगये और मरहट्टों की बीरता और रणदक्षताका भली प्रकार परिचय मिला। दूर दूर तक शिवाजी का बीरता का यश और आतङ्क फैल गया। उस समय औरङ्गजेब अफगानीं-ओं से ऐसा उलझ रहा था कि फिर इधरकी सुध न रही। शिवाजी की समर चातुरी और अलोक साधारन सामरिक बुद्धि को सुन सुन के लोग चकित और बिस्मित होने लगे।

शिवाजी ने तो पहलेही राजाकी उपाधी ग्रहन करली थी और अपने नामका सिक्का जारी करही दिया था परन्तु अब इन्होने शास्त्र विधान से अपना राज्याभिषेक करना विचारा। अभिशेष कार्य्य के लिये काशी के प्रसिद्ध वैदिक पण्डित गङ्गाभट्ट जी को बुलवाया। सन् १६७४ ईसवी के छठी जूनको रायगढ़ में वेद विधानानुसार शिवाजी का राज्याभिशेष बड़े समारोह से हुआ। उन्होने अपनी उपाधी "छत्रपति महाराज शिवाजी भोंसला" रक्खा। राज्याभिशेष के उपरान्त शिवाजी ने सुवर्णकी तुलाकी कि जिसमें १६००० पेगोड़ा अर्थात् ६४००० रुपये का सोना चढ़ा। यह सूवर्ण और

भोजन वस्त्र तथा अनेक दान पुण्य करके शिवाजी ने योग्य पण्डितों को तथा दुखिआओं को दिया। उस दिवश अतिउतङ्ग गिरिशृङ्ग पर स्थित रायगढ़ में आनन्दका समुद्रसा उमड़ आया। राज सिंहासन पर बैठने के स्मारक में शिवाजी ने अपना एक शाका भी चलाया। राज्य काज शाशने के लिये शिवाजी ने आठ अपने मुख्य प्रधान रक्खे कि जिनके पदों के ये नाम थेः—

(१) पेशवा पन्थ (२) अमात्य (३) पंथसचिव, मन्त्री, सेनापति, सुमन्त, न्यायाधीश और पण्डितराव। यही आठ पद राज्य काज सम्भालने के लिये स्थिर किये। और अपने विजय किये हुये देशों का काम आपाजी सोनदेव को सौंप दिया था।

सन १६७५ ईसवी में इन्होंने अपनी सैन्यको नर्मदाके अपर पार भेजा कि जिन्होंने जाकर गुजरात विजय की।

सन १६७६ में इन्होंने बीजापूर के आश्रित अपने वैभात्रिक भाई विंकाजीसे अपने पिता की जागीर बढवाई और बीजापूर का इलाका लूटके करनाटक विजय किया उस समय इनके साथ चार हजार पैदल और तीसहजार सवार थे। शिवाजी ने सामराज पन्तसे पेशवाई लेकर मोरोपन्थ पिङ्गलाको उसस्थान पर नियत किया। प्रतापराव गूजर इनका प्रधान सेनापति था कि जिसके मरने के उपरान्त हम्मीर राव मोहिता उसी काम पर हुआ।

सन १६७९ ईसवी में औरङ्गजेब ने बीजापूर विजय करने के लिये दिलेरखाँ के आधीन अनेक सैन्य सामन्त के साथ बड़ी फौज भेजी। उस समय बीजापुराधिपने शिवाजी से सहायता मांगी। शिवाजी ने सहायता देना स्वीकार किया और अपनी रण कुशलताई से दिलेरखाँ को ऐसा परास्त किया कि अन्त उसे दिल्ली लौट आना

पड़ा। इस सहायता के पल्टे में शिवाजी ने तुङ्ग भद्रा औ कृष्णा के बीचकी धर्त्ती कि जिसे रायचूर दो आवा कहते हैं पाई। सिवाय इसके दक्षिण में अपने पिताकी जागीर और वे स्थान कि जिन्हे इन्होने स्वयम् विजय किया था। बीजापूर की ओर से सहजही इन्होने बीमा के बीचके स्थानों को विजयकर लिया और औरङ्गजेब के आछत शिवाजीने तीन दिन तक औरङ्गाबाद में मन मानी लूट की। इस यात्रासे लौटकर शिवाजी ने भिन्न भिन्न और सत्ताईस किले जीते।

सन १६८० ईसवी में शिवाजी के घुटनो में दर्द उठी और घुटने फूल गये साथही ज्वर भी आगया। उस समय शिवाजी रायगढ़ में थे। इसी कालज्वर में तारीख पांच अप्रेल को महाबली, धर्म्म धुरीन, महाराज छत्रपति शिवाजी भोंसले का देहावशान हुआ। उस समय उनकी ५३ वर्ष की अवस्था थी।

शिवाजी के दो पुत्र थे सम्भाजी और राजाराम। सम्भाजी ने किसी एक ब्राह्मणी से बलात व्यभिचार किया था इसलिये शिवाजी ने उसे कुछ दिनके लिये कैदकर दिया था। यह उनके न्यायपरताका उज्ज्वल द्रव्यष्टान्त है

प्रतापी महाराज शिवाजी ने निज बाँहुबलसे बहुदूर व्याप्त निज राज्थ स्थापित किया था। उनके राज्य का विस्तार उत्तर में चारसौ मील लम्बा और एकसौ बीस मीलकी चौड़ाई में था। उन्होने करनाटक का दक्षिणी आधा हिस्सा निज अधिकार में कर लिया था। और तञ्जोरमें भी निज आधिपत्य स्थापन कर लिया था। नर्मदा से तंजोर तक और कंकन से समुद्रतठ लों विस्तृत भूस्वण्डके स्वामीओं में से सबही उन्हे कर देकर सन्तुष्ट रखते थे। दिल्ली से

लौटकर चौदह वर्ष तक लगातार शिवाजी ने बड़ी बड़ी लड़ाईयां मुगलों सेंली परन्तु सदा उनके दाँत खट्टेही करते रहे । जब शिवाजी जीते रहै औरङ्गजेब ने कभी भी दक्षिण देशों में स्वयम् जानेका साहस न किया। शिवाजी के देहान्त के उपरान्त सन १६८३ में औरङ्गजेवने स्वयम् दक्षिण में चढ़ाई की थीं।

शिवाजी के मृत्यु समाचार को सुनकर औरङ्गजेब के हृदय में एक प्रकार का दुःखसा हो आया । उसने कहा—यथार्थ में शिवाजी बड़ाही बहादुर बीर पुर्ष था कि जिसने मेरे मुकाविले पर एक स्वतन्त्र राज्यस्थापन कर लिया। मेरे सिपाही लगातार उन्नीस वर्ष तक उस बहादुर से लड़ते रहे और मैं चाहता रहा कि उसका विनासकरूं परसाबास है उसकी बहादुरी को कि जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कर अपनी टेक रख एक स्वतन्त्र राज्य स्थापन किया इसमें कोई सन्देह नही कि प्रतापी औरङ्गजेब का प्रताप भारत के चारों दिशामें अपना आतङ्क फैला रहा था, लोग उसके कठोर शाशन से भयभीत हो रहे थे, बीर राजपूतों के प्रताप का सूर्य्य अस्ताचल पर आश्रय ले रहा था, भारत के प्राचीन प्रताप और वैभवं को भारत दुर्दैव ने नष्ट और भ्रष्ट कर डाला था । किसी समय जिनके पूर्वजों के साहस और बीरता का पताका जगमें फहराया हुआ था उस समय वे स्वाधीनता को जलाञ्जली दे पराधानी की बेड़ी पाहिर अपने जीवन के दिन बिता रहे थे । जिस तेजस्वींताके बलसे पृथीराज ने पवित्र तिरोरी क्षेत्र में अपनी बीरता दिखाई थी, समर सिंह ने आत्म प्राण को तुच्छ मान भैरव रब से विधर्म्मी शत्रुओं का मुकाविला किया था, और अन्त में प्रातस्मरणीय प्रताप सिंह ने प्रबल पराक्रमी सहाय सम्पन्न शत्रुओं से युद्धकर बिजय

लक्ष्मी से परि शोभित हुये थे, उस समय वह तेजस्विता और स्वाधीनत्व प्रियता धीरे धीरे अस्त हो चली थी । आपस के अनवनत से लोग मटिया मेट हो रहे थे । हिन्दुओं को मुसल्मानो के आतङ्क से कहीं भी शरण नही रह गई थी । लोग उन्ही की गुलामी में अपने दिन बिता रहे थे । महा पराक्रमी शिवाजी ने उसी समय फूटको फोड़ एके के प्रभाव से अपना ऐसा प्रताप जमाया था कि जिसे देख लोग विस्मित और चकित होते थे । यहांतक कि इस प्रतापने प्रतापी औरंगजेब के हृदय को भी दहला दिया था। थोड़ेही दिनों में शिवाजी ने अपना प्रताप भारत के चारों ओर नगर नगर में फैला दिया था ।

शिवाजी केवल उद्दण्ड, समर कुशल बीरही न थे वरन राज्य शाशन, प्रजा पालन आदि राजनीति में भी ऐसे चतुर और कुशल थे कि जिनकी प्रशंसा अवलों अंगरेजी इतिहास लेखक गण करते हैं । क्या यह सामान्य आश्चर्य्य और प्रशंसा का विषय है कि पिता का दुतकारा, निरालम्ब, निराश्रय, निस्सहाय एक सामान्य वालक विना किसी के सहारे अपने पौरुष से अपने उद्योग से अपनी चतुराई से इतना बड़ा प्रतापी राजाधिराज हो जाय !

शिवाजी दुर्गा के परम उपाशक थे । इन्होने अपने खड्ग का नाम भवानी" रक्खा था । वह तरवार अबलों सितारे के राजा के यहां है और नित्य उसकी पूजा होती है ।

इति शुभम्

عرضداشت راجه شیوا که درباب موقوفی جزیه بحضور حضرت خلدمکان انار اللہ برہانہ معروض داشته

شکر عنایات الٰہی و توجہات شاہنشاہی کہ اظہر من الشمس والقمر است بجا آوردہ بعرض حضرت
شاہنشاہی میرساند اگرچہ خیرخواہ بحسب طالع خود از حضور والا بکنار آمدہ اما در لوازم خدمت
گزاری و پاسداری ہمہ وقت و ہمہ جا چنانچہ باید و شاید حاضر است و حسن خدمات و نیکو
ترددات این خیرخواہ بر سلاطین و امرا و خوانین و رایان و راجہ ہاے ممالک ہندوستان
و ولایت ایران و توران و بلخ و بدخشان و چین و ماچین بلکہ ساکنان ہفت کشور و مسافران بحر و بر
ظاہر و باہر است شاید بخاطر دریا مقاطر ہم پرتو افگن شدہ باشد لہٰذا نظر بتقدیم خدمات خود
و توجہات والا سخنہای چند از راہ خیراندیشی و دولتخواہی کہ متضمن خیریت خاص و عالم است
معروض میدارد کہ چون بتقریب مہم خیرخواہ زری باد رفتہ و خزانہ تہی گشتہ بنابران
مقرر فرمودند کہ از فرقہ ہنود مبلغے بصیغہ جزیہ تحصیل نمودہ سامان سلطنت را سرانجام
دہند حضرت سلامت بانی مبانی کشورستانی عرش آشیانی جلال الدین محمد اکبر بادشاہ
مدت پنجاہ و دو سال باستقلال تمام داد فرمانروائی دادہ با دین و آئین گروہہای مختلف
از عیسوی و موسوی و داؤدی و محمدی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم و فلکیہ و ملکیہ و نصریہ و دہریہ
و برہمن و سیوڑہ طریقہ انیقہ صلح کل اختیار کردہ بخطاب جگت گروی مالوف و معروف و
مشہور گردیدند بمیامن این دولت علیا و تاثیر چنین عظمت والا بہر جانب کہ نگاہ میکردند
فتح و اقبال استقبال می نمود و حضرت جنت مکانی نورالدین محمد جہانگیر بادشاہ مدت
بست و دو سال بر تخت اقبال تکیہ زدہ دل بایار جانی دوست در کامرانی داشتند و حضرت فردوس آشیانی
صاحب قران ثانی شہاب الدین محمد شاہجہان بادشاہ تا سی و دو سال سایہ فیض مایہ تاج مبارک
بر تارک جہانیان انداختہ و نیک نامی حاصل روزگار فرخندہ آثار نمودند اندازہ شان و شوکت
و صلابت این بادشاہان عظیم الشان ازین قیاس باید کرد کہ بادشاہ عالمگیر غازی در پرورش و پاسداری
دستور آنہا متعذر است آنہا نیز بر وجہ جزیہ قادر بودند اما آثار رحمت ایزد متعال شامل حال
جمیع مذاہب [illegible]

دران عهد در امن و امان بوده فارغ البال و آسوده حال در کسب کار و پیشه خود با اشتغال
داشتند و در دور حضرت اکثر قلعها از دست تصرف بدر رفته و مابقی عنقریب خواهد رفت
زیرا که در خراب کردن و ویران نمودن ملک از چهار طرف قصورے نمیشود رعایا
پامال و حاصل هر محال در پے زوال بجاے صد هزار هزار و بجاے هزار ده دار و هرگاه
فلاکت و افلاس بدولت خانهٔ پادشاهی جا کرده باشد بمردم دیگر چه رسد احوال امراے
معالی الوقت تنگ است سپاه در شورش و سوداگران نالش مسلمین گریان و
هنود بریان و اکثر مردم به پارچه و نان محتاج اند و امراے عظیم المرتبت از پنجه رخسار
سرخ نموده بخاص و عام میرسند فتوت سلطانی چگونه اقتضا کند و بر صفحهٔ روزگار
ثبت شود که پادشاه هندوستان بر کچکول گدایان و بیراگیان و سنیاسیان و
درماندگان دست دراز کرده جزیه میگیرد و بر کیسه گدا جوانمردی می کند و نام ناموس
تیموریه را بر باد میدهد حضرت سلامت اگر بر اصل کلام ربانی اعتبار نمایند رب العالمین
واقع است نه رب المسلمین همانا کفر و اسلام هر دو نقطه مقابل اند و طرح انگیزی
نقشبند حقیقی است اگر مسجد است بیادش بانگ میزنند و اگر کنشت است بشوق
او جرس می نوازند و تعصب بر دین و آئین کسی نمودن از قرآن مجید منحرف گردیدن
است و بر نقش ازل خط کشیدن ؎

زشت و زیبا هرچه بینی دست رد بر وے منه ؛ عیب صنعت هر که گوید عیب آن صنعت
گر است * در عالم عدالت العالیه جزیه هند ناسزا است اما بشرط حکومت
درست تواند بود پیشتر چنین بود غور فرما شوند و در راه کسی خلل نمیندازند در عصر حضرت
شهرها تاراج میروند صحرا که پرسد اول جزیه از مهارانا و راجها بگیرند که سر گروه
هنود اند و من بعد از خیرخواه موران و مگسان را آزار دادن مردی و مردانگی
نیست آفتاب بیهوشی و بوالهوسی ساطع و لامع باد *

(مطبوعه هدایت پریس بنارس محله دالمنڈوی)

राजा शिवा का प्रार्थनापत्र जो कि उसने जज़ियाबन्द करने के विषय में स्वर्गवासी (पादशाह आलमगीर) की सेवा में भेजा था।

—○*○—
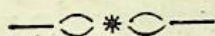
जगदीश्वर की कृपा और महीश्वर की दया का जो कि भान, तथा शीतभानु के समान प्रकाशमान हैं धन्यवाद देकर शाहंशाह की सेवा में निवेदन करता है। यद्यपि यह शुभचिन्तक अपने भाग्य-बल के कारण महानुभाव से विलग हो गया है तथापि सेवकी और मानरक्षन के विधान में सर्वदा और सर्वत्र यथार्थ रीति पर और जैसा चाहिये तत्पर रहता है। इस हितेच्छुक की शुभ सेवाएँ और उत्तमोत्तम परिश्रम हिन्दोस्तान, ईरान, तूरान, बल्ख़, बदख़शांन तथा चीन और माचीन देशों के पादशाहों अमीरों, सर्दारों, रायों और राजों पर वरन सप्तदीप के निवासियों तथा जल और थल के यात्रियों पर प्रकाशित और विदित हैं। कदाचित् (श्रीमान के) सरिताश्रवक अन्तःकरण पर भी प्रतिबिम्बित हुए होंगे। अतएव अपनी पूर्व सेवाओं और श्रीमान के अनुग्रहों पर दृष्टि करके, शुभचिन्तकता और राजभक्ति की रीति पर, कुछ बातें जो कि सर्वसाधारण तथा जन विशेष के हित से सम्बन्ध रखती हैं निवेदित करता है कि जब इस शुभचिन्तक पर चढ़ाइयों की भीड़ के सम्बन्ध में बहुत द्रव्य नष्ट हुआ और राज्यकोष धनरहित हो गया तो यह स्थिर किया गया कि हिन्दू जाति से जज़िये मध्ये द्रव्य उपार्जित करके राज्यकाज का प्रबन्ध किया जाय। महानुभाव! देश विजय विधान की नीव डालनेवाले और आकाश पर देहरी रखनेवाले जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह ने बावन वर्ष पर्यन्त राज्यसासन का न्याव चुकाया। भिन्न भिन्न समाजों इस्वी, मूसवी, दाऊदी, मुहम्मदी, फलकिया, म-

लकिया, नसीरिया, दह्रिया, ब्राह्मण, और सेवड़ा, के धर्म और व्यवहार के सम्बन्ध में सब से मेल रखनेवाले सुन्दर बर्ताव का व्रत-धारण करके जगत गुरु की उपाधि से परिचित विज्ञात और विख्यात हुए। इसी श्रेष्ठ श्रेष्ठता के सौभाग्य और इसी महान महत्व के प्रभाव के कारण जिधर दृष्टि करते थे जय और प्रताप अगवानी करते थे। और परलोकवासी श्रीमान नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर बादशाह बाईस वर्ष पर्यन्त प्रताप के सिंहासन पर विराजमान रह कर मन को प्राणप्रिया और हाथ को अभीष्ट प्राप्ति में रखते थे। और श्रीमान महोदय सुरपुर में डेवढी रखनेवाले मुहम्मद शाहजहां बादशाह ने बत्तीस वर्ष तक शुभ मुकुट का कल्याणमय छाया संसार निवासियों के सीस पर डाला और अपने मङ्गलमय समय में सुयश उपार्जन किया। इन महान पादशाहों के तेज, प्रताप, और धाक का अनुमान इसी से करना चाहिये कि पादशाह आलमगीर ग़ाज़ी उनके स्थापित किये हुये बर्ताओं और नियमों के पालन और संरक्षन में अक्षम है। वह लोग भी जज़िया लेने की सामर्थ्य रखते थे परन्तु महान परमात्मा की करुणा का परिचय सब धर्मों और व्यवहारों में समझ कर धार्मिकमात्सर्य की धूरि को शुद्ध अन्तःकरण के आसपास आने का मग नहीं देते थे। ईश्वर की सृष्टि के लोग उनके राज्य सासन के समय में निर्भीत और संरक्षित रहकर निश्चिन्तिता और सम्पन्नता पूर्वक अपने अपने कार्यों के साधन और व्यवसाय में प्रवृत्त रहते थे। महानुभाव के समय में बहुधागढ़ अधिकार से निकल गए हैं, और शेष भी शीघ्रही निकल जायँगे, क्योंकि देश के नष्ट और भ्रष्ट करने में चारो ओर से रंचक भी त्रुटि नहीं होती। प्रजा पिसी जाती है और प्रत्येक प्रदेशों की आय खिसी जाती है, सौ हज़ार के स्थान पर हज़ार और हज़ार के स्थान पर दस है। जब दुर्दशा और दारिद्र ने पादशाही सम्पति

सदन में स्थान पा लिया हो तो इतरजनों की क्या दशा हो । इस समय के बड़े २ अमीरों की अवस्था सङ्कीर्ण हो रही है । सेना हा हा कार में प्रवृत्त है और व्यापारी पुकार में, मुसल्मान रोते हैं और हिन्दू जलते, बहुधा मनुष्य असन और बसन नहीं पाते हैं और बड़े बड़े श्रेष्ट अमीर हाथों से मुंह लाल करके जन साधारण और विशेष को दिखाते हैं, पादशाही शील इन बातों को कैसे सहन कर सकता है। संसार के (इतिहास) के पत्र पर अङ्कित होता है कि हिन्दोस्तान का पादशाह भिक्षुकों, वैरागियों, सन्यासियों और निस्सहायों के खप्पर पर वलात हस्ताक्षेप कर जज़िया लेता है और, धनहीनों के खीसे पर पुरुशार्थ जानता है, और तैमोर के कुल के नाम और कानि को डुबोता है । महानुभाव ! यदि मूल ईश्वर वाक्य पर निश्चय करें तो भुवनेश्वर का शब्द घटित है न मुसल्मानेश्वर का । वास्तव में इसलाम और अनिसलाम दोनों आमने सामने के बिन्दु हैं और आदिचित्रकार के बनाए हुए ढाचें । यदि मसजिद है तो उसमें भी उसी की उत्कण्ठा में लोग बांग देते हैं और यदि देवालय है तो उसमें भी उसी की अभिलाषा में दुन्दुभी बजाते । किसी के धर्म और व्यवहार पर विद्वेष करना माननीय क़ुरआन से बिमुख होना है और आदि चित्र पर रेखा खींचना। श्रेष्ट न्यायालय की व्यवस्थानुसार तो हिन्दोस्थान का जज़िय अनुचित है पर हां धींगाधींगी के अनुसार उचित हो सकता है । पहिले ऐसाही था, ध्यान दें, और किसी के पन्थ में विघ्न न डालें । श्रीमान के समय में नगर उजाड़ हो रहे हैं बनों को कौन पूछे पहिले महाराना और राजों से जो कि हिन्दुओं के सर्दार हैं जज़िया लें, और फिर इस शुभचिन्तक से । चींटियों और मक्खियों को दुख देना पुरुषत्व और पुरुषार्थ नहीं कहलाता। अचैतन्यता तथा लोलुपता का भान प्रकाशमान और दीप्तिमान रहे ।

परिशिष्ट ।

—*—

ज्योंहीं यह पुस्तक छपकर तैयार हो चुकी थी कि मेरे प्रिय मित्र बाबू जगन्नाथदास बी० ए० (उपनाम रत्नाकर) सम्पादक साहित्यसुधानिधि ने मुझे एक पत्र फार्सी और उसका हिन्दी में अनुवाद करके दिया कि जो स्थानान्तर में प्रकाशित है ।

दिल्ली के शाही दर्बार में उक्त बाबू साहब के पूर्व्व पुरुषगण परम प्रतिष्ठा सम्पन्न थे । जब शाह आलम के बेटे जहांदारशाह दिल्ली से बनारस आये तो उन्हीं के साथ इनके प्रपितामह तुलारामजी यहां आये और शाहजादों के सन्निकट शिवालाघाट पर ठहरे कि जहां अबलों रहते हैं । इन्हीं के पुस्तकालय से यह पत्र भी मिला । इस पत्र को शिवाजी ने जजिया नामक कर (टैक्स) के उठा देने के हेतु औरङ्गजेब बादशाह को लिखा था । इस पत्र के पढ़ने से शिवाजी की निर्भयता, दृढता, नीति परायणता, प्रजावत्सलता आदि अनेक गुणों का परिचय मिलता है इसी लिये यह पत्र उनके जीवनचरित्र के साथ प्रकाश किया गया ।

ग्रन्थकर्त्ता

—○*○—

देशी कारीगरी के अद्भुत नमूने ।

चँवर, हाथीदांत और मलियागिर चन्दन के बने हुये परन्तु चँवरीगाय के चँवर के मुकाविले के, और ऐसी कड़ी चीज को बाल के मुकाविले पर लाना क्या सामान्य आश्चर्य्य है? इसकी खूबसूरती देखने ही पर है कहां तक प्रशंसा करें । कीमत सस्ती चन्दन के चँवरों की नम्बर १ २॥) नं० ३, ८) नं० ४ १६) । हाथीदांत के चँवरों की नम्बर १ ५) नं० २ ८) नं० ३ १६) नं० ४ ३०) ।

कांच के हेण्डिल ।

सुहावने, सुन्दर, सुफेद और भीतर अनेक रङ्ग विरंगी कारीगरी लिखते जाइये और कलम को देख जी बहलाइये दामों में भी सस्ते १॥) दर्जन ।

कांच की चूड़ियां ।

अहा हा हा? यह कांच की चूड़ियां क्या हैं मोहनी मन्त्र के कड़े हैं यह रंग बिरंगी लहरदार चूड़ियों की कहां तक तारीफ करें इन्हे न पहनाओ तो पछताओ कीमत मोटी ।=) दर्जन महीन ॥) दर्जन ।

कंघी ।

यह रबर की कंघीयां श्याम रंग की जिन पर सुनहले सच्चे सोने के हर्फों में शैर, दोहे, श्लोक, पोयेटेरी के ऐसे चुनिन्दे और हर किसी के योग्य पद हैं कि देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाय कीमत ॥) और इससे भी अधिक मूल्य तक की हैं ।

कपूर की माला ।

इस देशी कारीगरी को देखिये तो सही ! जहां हैंजा

फैला हो बस मकान में टांग दीजिये या गले में पहन लीजिये हैजे शरीफ दूरही भागते रहेंगे कीमत भी सस्ती सिर्फ २)।

देशी बनी हुई प्रसिद्ध दवाइयां।

फ्रेन्डएण्ड कम्पनी मथुरा का बनाया

असली दन्त कुसुमाकर

यह मञ्जन सम्पूर्ण भारत में एक अलभ्य गुणदाता है। दांतों को पत्थर के समान मजबूत कर जन्म पर्यन्त अनेक रोगों को दूर करता है। सहस्रों मनुष्यों ने परीक्षा की और सार्टीफिकेट दिये एक बार मँगाकर स्वयम् परीक्षा करलो मूल्य छोटा बक्स ॥) बड़ा बक्स १) पांच के खरीदार को १ मुफ्त।

लोम नाशक।

भाई वाह ? इसमें जादू का असर बतलावें या क्या बतलावें ? पांच मिनट में बिना किसी तकलीफ के चाहे जहां के रोयें साफ कर लीजिये। कीमत छोटी शीशी ।) बड़ी ।≈)।

दाद की दवा।

इस दवा से यदि दाद साफ उड़ न जाय तो कीमत वापिस कर लीजिये फिर भी एसी अमूल्य दवा न खरीदो तो खुशी आपकी कीमत ॥)।

हैजे की दवा अर्क कपूर।

बस इसकी तारीफ करने की तो जरूरतही क्या है हरसाल लाखों शीशी हिन्दुस्तान में बिकती हैं कीमत फी शीशी ।)।

बाल बढ़ाने का खुशबूदार गुलाबी नारियल का तेल।

बालों की कमजोरी वा अन्य किसी कारण से गिरना, सिर में दर्द होना, बिना समय के सफेद हो आना, बालों में कियास होना इत्यादि तकलीफों को रफा करता है इससे सिर

ठण्डा रहता है और बाल भी नहीं चिकटते बस एक दफे आ-जमा कर देखिये कि कैसी उत्तम खुशबू भी इसमें आती है । कीमत छोटी शीशी ।।) बड़ी शीशी ।।।≈) आने ।

वर्षों से आजमाई हुई नाताकती की दवा ।

इसके गुण कहां तक लिखें "नाताकती" इस बात के कहने से जितनी बातों पर ध्यान हो सक्ता है उन सबको यह अक्सीर दवा है कीमत फी शीशी १) रु० ।

आयुर्वेदीय सालसा ।

खून सम्बन्धी आतशक इत्यादि बीमारियों के लिये यह सालसा अक्सीर का काम देता है । अमीर आदमियों की गुप्त रीति से बीमारी को आराम करनेवाली यही एक दवा है कीमत फी शीशी १) रु० ।

हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास ।

इसमें भारतवर्ष के कुल हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास बड़ी उत्तमता के साथ दिया है ऐसी पुस्तक आज तक नहीं बनी थी । कौन पत्र कब कहां से किसके द्वारा निकला, और उसके क्या लाभ हुआ अब प्रकाशित होता है वा नहीं तथा कीमत आदि सब खुलासा तौर से दिया गया है । समाचार पत्रों के लिये सर्कारी नियम और बहुत सी प्रयोजनीय बातें अखबारों के लिये डांक सम्बन्धी नियम तथा अखबारों का सूचीपत्र आदि कहां तक लिखें देखने से स्वयम् मालूम हो जावेगा कि कितनी मेहनत और कितने खर्चे से यह कितना उम्दा काम किया है। अखबारों में नोटिस देनेवालों के लिये तो अमूल्य है कीमत सिर्फ ।।≈) आने ।

योंही आजमाई हुई अनेक औषधि, उत्तम प्रसिद्ध पुस्तकें आदि अनेक वस्तूहैं दो पैसे के टिकट भेज मुझसे पूछ लीजिये ।

नन्दलाल वर्म्मा मैनेजर
फ्रेण्ड एण्ड कम्पनी मथुरा — सिटी ।

ऐजेन्सी ! आढ़त ! ! ऐजेन्सी ! ! !

सर्वसाधारण पर विदित किया जाता है कि मथुराजी से वस्तू मँगानी हो तो इस आढ़त द्वारा मगाने से बड़ा लाभ होगा क्योंकि अनेक महाशयों के हमारे पास अक्सर पत्र, आया करते हैं कि अमुक महाशय ने हमको धोखा दिया अमुक ने चीज खराब भेजी इत्यादि इसलिये ग्राहकों को धोखे से बचने के लिये यह एजेन्सीकी गई है जहां तक हो सकेगा ग्राहकों की मगाई चीज बहुत उम्दा जांच कर और किफायत के साथ भेजी जावेगी । यदि मगाई हुई वस्तु में किसी तरह का धोखा पड़गया होगा तो वह चीज न भेजी जावेगी आढ़त तो बेशक आप को आध आना रुपया देनी होगी वो सिर्फ ५०) रुपये के माल तक पचास से ऊपर १००) रु० के माल मगानेवाले को सिर्फ २) रुपया सौ के हिसाब से और १००) से ऊपरवाले को सिर्फ १॥-) सो के हिसाब से परन्तु फिर किसी चीज में धोखा भी न खाइयेगा। माल नक़द रुपया पेशगी आने पर या डांक व्यय और रेल किराये पेशगी आने पर वेल्यूपेबिल से भी भेजा जायगा । और भी जो कुछ मथुरा का हाल पूछना हो मुझसे सब कुछ पूछिये मगर)॥ का टिकट जवाब के लिये आए बगर जवाब न दिया जावेगा ।

आपका सच्चा हितैषी नन्दलाल वर्म्मा
फ्रेण्डण्ड कम्पनी मथुरा ।